प्रश्न: क्या किसी व्यक्ति का अजीब बातें महसूस करना या बहुत
दूर के लोगों की आवाज़ें सुनना परमेश्वर से आ सकता है?

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसे कुछ असामान्य अनुभव हो रहे हैं। एक बार उसने मुझसे कहा, “मैं लोगों को यह कहते हुए सुन रहा हूँ कि वे मुझे गिरफ्तार करने आ रहे हैं।” फिर उसने मुझसे पूछा, “क्या तुम भी उन्हें सुनते हो?” मैंने कहा, “नहीं, मुझे कुछ नहीं सुनाई दे रहा।” साफ़ था कि वे आवाज़ें सिर्फ़ वही सुन रहा था।

एक बार उसने मेरा हाथ पकड़कर कहा, “क्या तुम उन्हें मेरा गीत गाते हुए सुन रहे हो?” लेकिन मुझे कुछ भी नहीं सुनाई दिया। वह भीतर तक डरा हुआ था।

कुछ रात पहले, मैंने उसे घर के बाहर मचीटा पकड़े खड़ा पाया। उसने पूछा, “क्या तुम उस बूढ़ी औरत को सुन रहे हो, जो कह रही है कि मैंने उसकी नातिन के साथ अपराध किया?” (जबकि वह औरत हमसे काफी दूर रहती है।) मैंने कहा, “नहीं, मैं कुछ नहीं सुन रहा।” वह फिर मचीटा लेकर शांत-सा घर लौट गया। कभी-कभी वह कहता है कि वह अपने दरवाज़े पर लोगों को खड़े देखता है।

एक बार मैंने उससे यीशु के बारे में बात करने की कोशिश की, लेकिन उसने कहा, “मैं सैनिक तरीके से लड़ूँगा,” जिसका मतलब मैंने तांत्रिक या जादुई तरीकों से लिया। लेकिन अब मैं देखता हूँ कि वह वैसा कुछ भी नहीं कर पा रहा—उसकी हालत बदतर होती जा रही है, और मुझे डर है कि यदि कुछ नहीं किया गया तो वह अपनी मानसिक

स्थिरता पूरी तरह खो सकता है।

तो मेरा प्रश्न है: उसके साथ क्या हो रहा है? इसके पीछे कौन-सी आत्मा काम कर रही है?

उत्तर:
शालोम।

आध्यात्मिक संसार बिल्कुल वास्तविक है। परमेश्वर का राज्य भी सक्रिय है और अंधकार का राज्य भी। पवित्र आत्मा लोगों को मसीह के समान बनाता है—लेकिन शैतान डर, झूठ और नकली अनुभवों के द्वारा लोगों को फँसाता और दास बनाता है।

इस व्यक्ति के मामले में—आवाज़ें सुनना, दूर की बातें सुनने का दावा करना, और ऐसे लोगों को देखना जो वास्तव में वहाँ नहीं है—यह स्पष्ट संकेत है कि उसके भीतर कोई आत्मा काम कर रही है। लेकिन यह परमेश्वर का पवित्र आत्मा नहीं है। यह एक अशुद्ध आत्मा है, जिसे शायद किसी तरह के तांत्रिक, जादुई या दुष्ट ज्ञान के संपर्क से अवसर मिला है।

यह परमेश्वर से क्यों नहीं हो सकता?

क्योंकि उसके जीवन में दिखने वाला “फल” केवल भय, भ्रम, यातना और बेचैनी है—जो परमेश्वर के आत्मा की विशेषताएँ नहीं हैं।

बाइबल कहती है:

“क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं, परन्तु सामर्थ, और
प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।”
—2 तीमुथियुस 1:7 (ERV-Hindi)

और:

“परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धैर्य, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है…”
— गलातियों 5:22–23 (ERV-Hindi)

यदि पवित्र आत्मा उसमें होता, तो उसके जीवन में शांति, आनन्द, संयम और नम्रता जैसे फल दिखाई देते। लेकिन इसके विपरीत, वह डर, आवाज़ों के सताव और लगातार संदेह में जी रहा है। ये दुष्ट आत्मा के प्रभाव के लक्षण हैं।

जैसे पवित्र आत्मा विश्वासियों को वरदान देता है (1 कुरिन्थियों 12:7–10), वैसे ही दुष्ट आत्माएँ उन वरदानों की नक़ल करती हैं—लोगों को धोखा देने और डराने के लिए। इसलिए दुष्ट आत्मा से प्रभावित लोग कभी-कभी दूर की आवाज़ें सुनते हैं, असामान्य बातें महसूस करते हैं, या झूठे “आध्यात्मिक अनुभव” बताते हैं।

यीशु ने चेताया:

“चोर आता ही है कि चोरी करे, और मार डाले, और नाश करे; मैं आया
कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।”
— यूहन्ना 10:10 (ERV-Hindi)

हो सकता है यह व्यक्ति शैतान के जाल में फँस गया हो—शायद जाने- अनजाने किसी संपर्क या विश्वास के कारण। क्योंकि वह यीशु को नहीं जानता, वह इन अनुभवों को परमेश्वर के वरदान समझ सकता है। परन्तु पवित्रशास्त्र कहता है:

“और कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि आप ही शैतान ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धर लेता है।”

—2 कुरिन्थियों 11:14 (ERV-Hindi)

अब क्या किया जाए?

सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात है कि वह यीशु मसीह का सुसमाचार सुने और उस पर विश्वास करे।

“इसलिये विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता
है।”
— रोमियों 10:17 (ERV-Hindi)

उसे शांत मन से बताइए कि यीशु मसीह शैतान के कामों को नष्ट करने आए (1 यूहन्ना 3:8), और अपने क्रूस और पुनरुत्थान द्वारा परम स्वतंत्रता देते हैं।

यदि वह विश्वास के साथ प्रतिक्रिया देता है:

उसके लिए यीशु के नाम में प्रार्थना करें,
उस पर हाथ रखकर दुष्ट आत्माओं को निकलने की आज्ञा दें,
उसे मन-फिराव और बपतिस्मा के लिए प्रोत्साहित करें।

जैसा लिखा है:

“मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लो; तब तुम पवित्र आत्मा का
वरदान पाओगे…”
— प्रेरितों के काम 2:38–39 (ERV-Hindi)

जब पवित्र आत्मा उसके जीवन में आएगा, तो अंदर से परिवर्तन शुरू होगा—डर की जगह शांति, भ्रम की जगह स्पष्टता, और अस्थिरता की जगह संयम।

“इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे तो तुम सचमुच
स्वतंत्र हो जाओगे।”
— यूहन्ना 8:36 (ERV-Hindi)

अंत में एक प्रोत्साहन:

उसके लिए प्रार्थना करते रहें। सत्य बताते रहें। यीशु का क्रूस हर दुष्ट सामर्थ्य से बड़ा है, और वह उन लोगों को छुड़ाने आए थे

जो बँधे हुए, घायल और खोए हुए हैं।

“प्रभु का आत्मा मुझ पर है… उसने मुझे भेजा है कि मैं खंडित हृदय वालों को चंगा करूँ, बंदियों को स्वतंत्रता का संदेश दूँ…”
— लूका 4:18 (ERV-Hindi)

प्रभु आपको उसके लिए सेवा करने में ज्ञान और सामर्थ दे।

Share on:
WhatsApp

Print this post